

Class - B-A- Part - 1

Sub - Hindi (HON) Paper - 1

by Rushoon Kumar (R.B. Jaiswal)

① प्रेमसाधन काव्य के उद्गम स्रोत एवं पूर्व परंपरा पर प्रकाश डालें ?

उत्तर - हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक इतिहासकारों एवं आलोचकों में प्रेमसाधन काव्य के प्रेमत्व एवं काव्य रूपों को भारतीय महाकाव्यों में चित्रित गार्हस्थिक प्रेम की कसौटी कसती पर कसते हुए इस विदेशी परंपराओं पर आचार्य वीरचंद विद्याधर ने आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मतानुसार भारतीय प्रेम पद्धति का आदर्श राम-सीता के विवाहोत्तर प्रेम में ही मिलता है जबकि प्रेमसाधन काव्यों में विवाहपूर्व समाज-निरपेक्ष स्वच्छंद प्रेम का निरूपण हुआ है। अतः इसे भारतीय प्रेम पद्धति के अनुकूल स्वीकार नहीं किया जा सकता। यदि हम 'रामायण' में चित्रित दाम्पत्य भावना के अतिरिक्त अन्य भारतीय काव्यों में वर्णित प्रेम के स्वरूप पर विचार करें तो ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे, जिनमें स्वच्छंद प्रेम या रोमांस का चित्रण स्पष्ट रूप से हुआ है। उदाहरण के लिए तम्रवेद के उर्वशी-पुरुुरवा के प्रेमसाधन में, महाभारत के नल-दमयंती तथा संचरण प्रकरणों में तथा पौराणिक साहित्य के उषा-अनिरुद्ध, प्रभावती-प्रद्युम्न, राधा-कृष्ण आदि आख्यानों में ऐसे ही प्रेम का निरूपण हुआ

हो जो विवाह की मर्यादाओं की अपेक्षा
चित्र दर्शन या स्वप्नदर्शन जन्म सौदाया-
नयति से अधिक प्रेरित है तथा
जिनमें नायिका की प्राप्ति के
लिए नायक को भारी संघर्ष
अथवा युद्ध करना पड़ता है।
अतः इसमें कोई संदेह नहीं
कि भारतीय संस्कृति एवं साहित्य
में जहाँ सीता-राम के गार्हस्थिक
दोपत्यभाव की परंपरा मिलती
है वहीं उसके साथ-साथ स्वच्छंद
प्रेम या रोमांस की भी एक अन्य
परंपरा मिलती है। हिन्दी की
प्रेमाख्यात्मक परंपरा को फारसी मरा-
ठ विधों से प्रेरित एवं अनुप्राणित
सिद्ध करने के लिए अयुक्त तर्कों
के अविरत आचार्य रामचंद्र शुक्ल
द्वारा अन्य तर्क भी दिये गये
हैं।

(i) फारसी मुसलविधों की भांति हिंदी
प्रेमाख्यात्मक में भी प्रेम का चित्रण
स्कांतिक, लोकवाद्य और आदर्शवादी है।

(ii) मुसलविधों में कथा समो या
अच्छाओं में विभक्त नहीं होती।

(iii) ये प्रेम कथानिधियाँ मुसलमानों
के द्वारा ही लिखी गयी हैं।

(iv) कथा का आरंभ ईश्वर-सृष्टि
प्रेम की वंदना या उस समय
राजा की प्रशंसा के साथ होता है।

स्पष्टतः कहा जा सकता है
कि स्कांतिक लोकवाद्य आदर्श प्रेम के
निरूपण का एक सशक्त माध्यम
भारतीय संस्कृति में भी मिलती है।